हिमकथा
मानव-प्रकृति के अंतरंग रिश्ते

खंड 5, अंक 2
शरद ऋतू, 2024

नवांग तन्खे द्वारा चित्रण

ऊंचे पहाड़ अक्सर शांति और सुकून की तस्वीर पेश करते हैं। लेकिन वे कई प्रकार की चहल पहल से भी भरे होते हैं। हिमकथा के माध्यम से इन पहाड़ों की ऐसी ही कहानियां आपके लिए इकट्ठी की गयी हैं।

आपको यहां कोई न कोई दिलचस्प किरदार हमेशा दिखेगा - कोई जिज्ञासु पड़ोसी, कोई शरारती दोस्त, कोई खोया हुआ यात्री, प्यारी सी कोई दादी, कोई भूखा जानवर, कोई पौराणिक चरित्र या बस कहीं कोई अकेला खड़ा पेड़। और हर किसी के पास बताने के लिए एक कहानी होती है। शाम के आसमान की छटा के जैसी रंगीन कहानी।

हिमकथा के माध्यम से इन पहाड़ों की ऐसी ही कहानियां आपके लिए इकट्ठी की गयी हैं।

This issue:

स्पीति घाटी की पहली बस
PAGE 01

चंद्रा नदी का उद्गम
PAGE 04

बिच्छू बूटी की सेना
PAGE 07

खिराव गोम्पो दोरजे
PAGE 10

अकेला पेड़
PAGE 13

स्पीति का सबसे समृद्ध गाँव
PAGE 16

मोमो पार्टी
PAGE 18

कुत्ता और भेड़िया
PAGE 21

खरगोश, लौमड़ी और हिम तेंदुआ
PAGE 23

बालू थकांगबू
PAGE 25

लाल लोमड़ी और याक: दोस्ती और बदले की कहानी
PAGE 28

नवांग तन्थे द्वारा चित्रण

स्पीति घाटी की पहली बस

हिमालय के सबसे ऊंचे पहाड़ों में स्थित है, **स्पीति घाटी** और स्पीति घाटी का पहला गाँव है, लोसर। लोसर पहुंचने के लिए दो ऊंचे पहाड़ी दर्रे पार करने पड़ते हैं। सर्दियों में भारी बर्फबारी की वजह से स्पीति पहुंचना नामुमकिन होता है। बर्फ की वजह से लोसर और स्पीति घाटी के अधिकांश लोग, सर्दियां अपने-अपने गाँव में ही बिताते हैं। सर्दियों में कुछ खास काम भी नहीं होता है। पर उस साल की बात कुछ और ही थी। सभी लोग गर्मियों में स्पीति आने वाली बस सेवा को लेकर बहुत उत्साहित थे। तब तक कुछ ही लोग स्पीति से बाहर जाते थे। अधिकतर यात्राएं घोड़ों पर होती थी, और तब तक शायद ही किसी ने मोटर गाड़ी देखी थी।

गाँव में सभी लोग सिर्फ बस की चर्चा कर रहे थे। कैसे यह बस कुछ ही घंटों में पहाड़ फाँद कर स्पीति पहुंच जाएगी, वो भी 42 सवारियों को बोझा ढोकर! ये कौन सा जानवर है जो इतना वजन ढोकर भी इतना तेज दौड़ सकता है? सारे स्पीति, और खास कर लोसर में, सभी लोग इसी चर्चा में उलझे थे। कोई कहता कि ये 6 पैर वाला जानवर है जो किसी भी घोड़े से तीन गुणा तेज दौड़ सकता है, तो कोई कहता कि इस में 10 खच्चरों की ताकत है। और इसकी आंखें रात को पहाड़ी रास्तों को ऐसी चमका देती है मानो जैसे चांदनी रात हो। आने वाली पहली बस का ख्याल सब के दिमाग में दौड़ रहा था।

लंबी सर्दी के बाद आखिरकार सूरज ने दिशा बदली और मौसम गर्म होने लगा। बर्फ पिघलने में कुछ हफ्ते लग गए। फिर एक दिन खबर आई कि स्पीति की पहली बस तीन दिन बाद शुरू होगी।

स्पीति की पहली बस, सब से पहले लोसर पहुंचने वाली थी और बस का स्वागत करने का जिम्मा लोसर वालों को मिला था। सारा गाँव स्वागत सभा के आयोजन में शामिल हो गया था। गाँव के मर्द गाँव का गेट सजाने में व्यस्त हो गए। आम तौर पर गाँव के गेट को तभी सजाया जाता था जब कोई पूज्य **रिनपोछे** गाँव में पधारते थे। महिलाओं ने खेत के काम की छुट्टी करके सारे गाँव के लिए भोजन तैयार करने का जिम्मा ले लिया था। स्कूल की भी छुट्टी कर दी गई थी, ताकि बच्चे भी हिस्सा ले सके।

> किसी ने बस को छुआ, तो कोई बस के शीशे और दरवाजे को देख रहा था। पर सभी बहुत पास जाने से डर रहे थे - कहीं बस भी किसी गुस्सैल घोड़े की तरह लात न मार दे। ड्राइवर और कंडक्टर का स्वागत तो किसी फिल्म के हीरो की तरह किया जा रहा था।

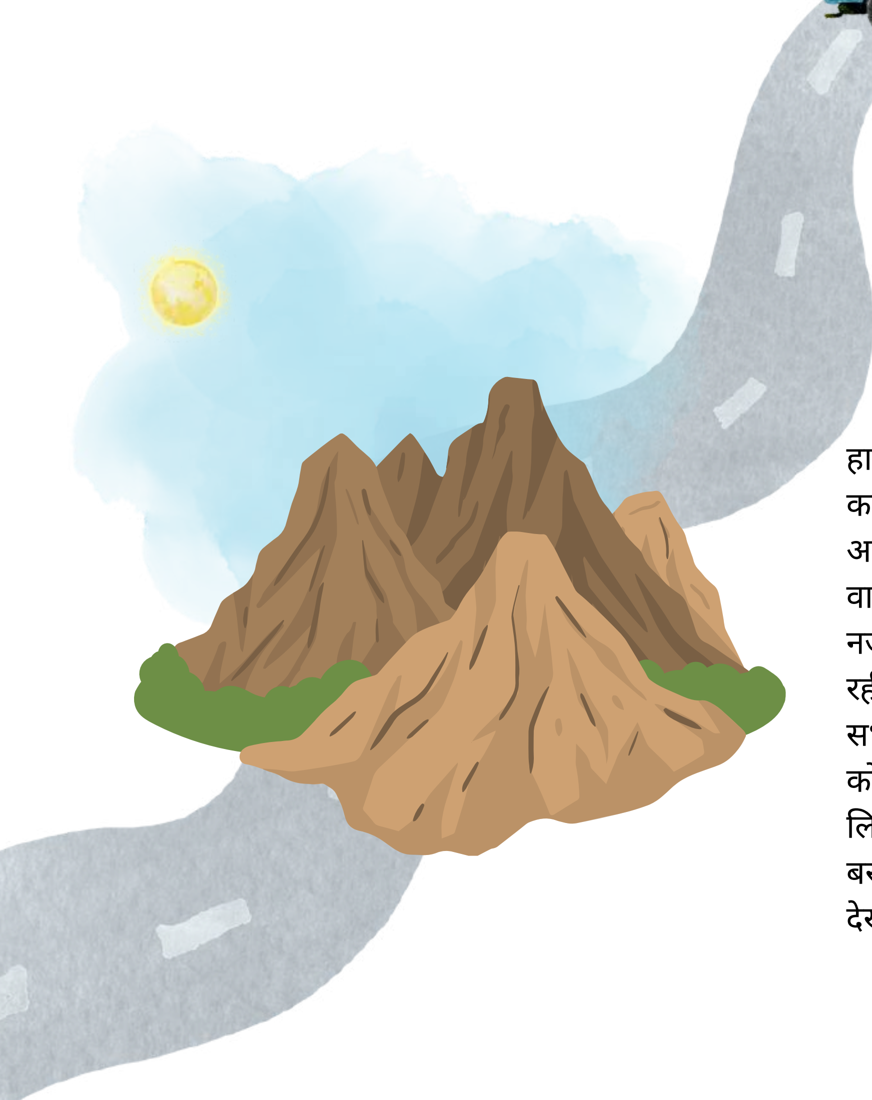

हाथ में **आशी** लेकर सारा गाँव पहली बस का स्वागत करने पहुंचा था। बस नज़र में आने से पहले बस की आवाज़ सब ने सुनी। बस की घुर्राहट सुन कर सारे गाँव वालों की खुशी से चीख निकल पड़ी। और फिर, बस, नजर में आई। बस, कच्चे रास्ते पर उछल-उछल के चल रही थी। कोई अपनी जगह से नहीं हिला, मानो जैसे सभी के सिर पर कोई भूत बैठ गया हो। सजे हुए गेट को पार करके बस रुक गई। बस का निरीक्षण करने के लिए सभी बड़े लोग सतर्क होकर आगे बढ़े। किसी ने बस को छुआ, तो कोई बस के शीशे और दरवाजे को देख रहा था।

पर सभी बहुत पास जाने से डर रहे थे - कहीं बस भी किसी गुस्सैल घोड़े की तरह लात न मार दे। ड्राइवर और कंडक्टर का स्वागत तो किसी फिल्म के हीरो की तरह किया जा रहा था।

कुछ देर में, जब सब ने बस को जी भर के देख लिया, तब सभी ने खाने के पंडाल की ओर रुख किया। जैसे ही भीड़ निकल गई, **ईवी** निंग गेमो अपने घर से बाहर आ गई। ये वृद्ध महिला हाथ में एक गठरी घास लेकर बस की तरफ चल पड़ी।

बस के सामने पहुच कर ईवी ने घास को बस के सामने बिछा दिया।

नवांग तन्खे द्वारा चित्रण

फिर बड़े प्यार से बस को निहारते हुए बोली – "तुम बहुत थक गये होगे। इन गाँव वालों को कोई तहज़ीब ही नहीं है।

सबने शोर मचाया और फिर खाना खाने निकल गए। किसी को तुम्हारी फिक्र ही नहीं! पर तुम चिंता मत करो, मैं हूं ना तुम्हारे साथ। तुम खाओ। जितनी घास खानी है तुम खाओ। मैं और ले आउंगी।"

ईवी निंग गेमो ने बस को प्यार से थपथपाया और बस के घास खाने की राह तकती खड़ी रही।

स्पीति घाटी हिमालय का एक उच्च ऊंचाई वाला क्षेत्र है, जो उत्तरी भारतीय राज्य हिमाचल प्रदेश में स्थित है। यह भारत के सबसे सुदूर इलाकों में से एक है।

रिनपोछे तिब्बती बौद्ध धर्म में एक सम्मानित और उच्च प्रशिक्षित आध्यात्मिक शिक्षक या गुरु को संबोधित करने वाली एक उपाधि है।

आशी (जिसे खटक भी कहा जाता है) हिमालय क्षेत्र में सम्मान के प्रतीक के रूप में दिया जाने वाला एक सफेद दुपट्टा है। यह आमतौर पर लामाओं और अति विशिष्ट अतिथियों को अर्पित किया जाता है।

ईवी एक उपाधि है जिसका प्रयोग स्पीति में हर कोई अपनी दादी या बुजुर्ग महिला के लिए करता है।

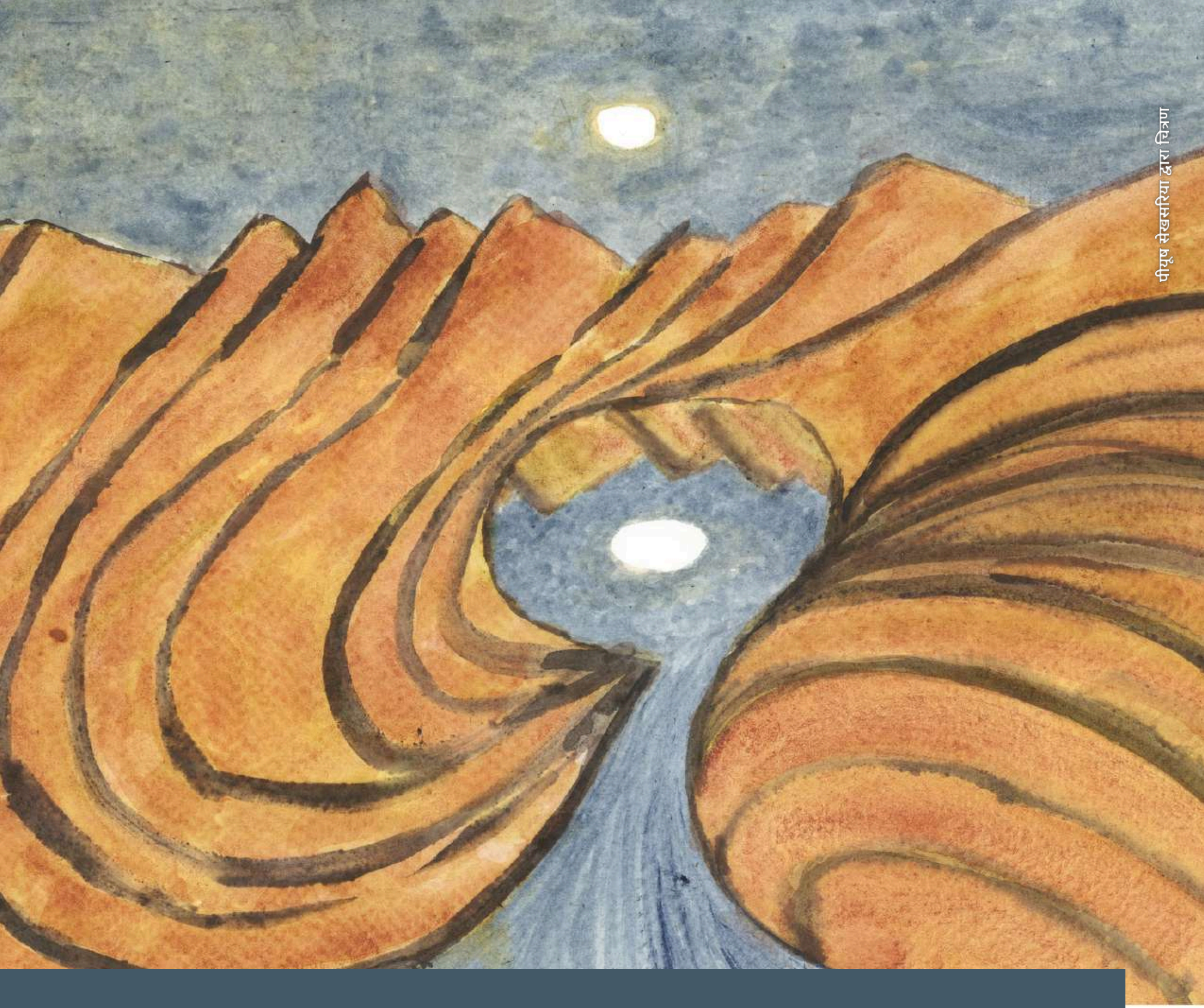

पीयूष सेखसरिया द्वारा चित्रण

चंद्रा नदी का उद्गम

काँगड़ा के **गद्दी** हर साल गर्मियों में **लाहौल** आते हैं। पीढ़ियों से गद्दी चरवाहे घुमंतू जीवन बसर करते आ रहे हैं। लाहौल के ऊंचे पहाड़ी चरागाहों में वो गर्मियों के दिन बिताते हैं। देखने वालों को गद्दी चरवाहों का जीवन बहुत सुहाना लग सकता है - बर्फीले पहाड़ों की सुनहरी धूप में दिन बिताना किसे अच्छा नहीं लगेगा? पर इनके जानवर इन्हे आराम से बैठने दें तब ना! सुबह होती नहीं कि इनकी भेड़-बकरियां मिमिया - मिमिया कर नाक में दम कर देती हैं। इन भेड़-बकरियों को तो बस अपनी भूख की पड़ी रहती है और इस तरह इन्हे रोज़ एक नई जगह जाना पड़ता है जहां हरी - हरी घास हो। बेचारा गद्दी करे भी तो क्या करे? उसे तो बस अपनी भेड़ -बकरियों के पीछे दौड़ते रहना पड़ता है। उसपर यह डर भी कि क्या पता कब कोई भेड़िया आकर उसकी भेड़ उठाले। गर्मियों के दिन बड़े लंबे होते हैं। दिन भर की मेहनत के बाद गद्दी चरवाहे को शाम को जाकर कहीं

सांस लेने की फुर्सत मिलती है।

नूपा लाल को अपने चाचा के साथ चलते हुए कुछ ही साल हुए थे। चाचा अब बुजुर्ग हो चले थे इसलिए नूपा लाल अपने चाचा और उनकी भेड़-बकरियों के साथ जाता था। उनका **डोका** लाहौल के सबसे दूरतम घाटी में था, जो कि इतनी दूर था कि अधिकतर गद्दी वहाँ तक कभी पहुंचे भी नहीं थे। ये जगह अपनी एक झील के लिए मशहूर थी। कहते थे इस झील का पानी नीलम सा था!

नूपा लाल दिन भर भेड़-बकरियों के साथ रहता था और उसके चाचा खाना बनाते थे।

शाम को भेड़-बकरियों को बाड़े में बंद करके नूपा लाला अपनी **थाच** में लौटता, जहां से झील साफ दिखती थी। वहां बैठ कर वो अपनी बांसुरी निकालता और उसे बजाया करता। उसके चाचा अपनी चिलम सुलगाकर उसके कश भरते। नूपा लाला की बांसुरी सुनने वाला वहां कोई नहीं होता था, तब भी वो दिल से बांसुरी बजाता था क्योंकि उसे बांसुरी बजाना बेहद पसंद था।

नूपा लाल शाम होने तक बांसुरी बजाता था और फिर अंधेरा होते-होते खाना खाकर थाच में सो जाता था।

लगभग हर दिन उसका ऐसे ही बीतता था, लेकिन वो एक दिन अलग था।

काँगड़ा वह हिमालयी क्षेत्र है जहां गद्दी चरवाहे रहते हैं। यह हिमाचल प्रदेश राज्य का एक जिला भी है।

गद्दी चरवाहे एक पशुपालक जनजाति है जो भेड़ और बकरी पालते हैं। सबसे मजबूत पुरुषों और महिलाओं में से कुछ, गद्दी, अपने पशुओं के साथ 10-11 महीनों तक हिमालय और उसके निचले मैदानों में एक लंबी दूरी तय करते हैं।

लाहौल भी एक सुदूर हिमालयी घाटी है जहां रोहतांग दर्रे को पार करने के बाद पहुंचा जा सकता है। लाहौल घाटी स्पीति घाटी के निकट है और लाहौल-स्पीति मिलकर हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है।

डोका एक विशिष्ट स्थान होता है जहाँ गद्दी चरवाहे डेरा डालते हैं।

थाच पत्थर की झोपड़ी होती है जिसके अंदर गद्दी चरवाहे रहते हैं जब वे डेरा डालते हैं। ये पत्थर की झोपड़ियां पुरानी होती हैं और पत्थरों को एक साथ इकट्ठा करके खूबसूरती से बनाई जाती है। यह चरवाहों को खराब मौसम से भी बचाती हैं।

चंद्रा नदी लाहौल और स्पीति जिले में मुख्य हिमालय श्रृंखला के आधार पर पड़ी हुई बर्फ से निकलती है। इसके उद्गम स्थल पर सुंदर चंद्रताल का निर्माण हुआ है।

चंद्रताल एक खूबसूरत ऊंचाई पर स्थित झील है जो अपनी सुंदरता के लिए जानी जाती है। जल पक्षियों को देखने के लिए भी यह एक बहुत ही खूबसूरत जगह है। यह पौराणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है।

वो पूर्णिमा की रात थी और नूपा लाल ने जब अपनी बांसुरी बजाकर एक तरफ रखी तो ऐसा लगा जैसे किसी ने उसपर जादू-टोना कर दिया हो। उसकी नजर झील पर थी जहां चाँद की परछाई झील के नीले पानी में दिख रही थी। अचानक से वो खड़ा हुआ और चीख पड़ा, "अरे बचाओ कोई... देखो देखो... चाँद डूब रहा है... बचाओ!" ऐसा चीखते हुए वो झील की तरफ दौड़ पड़ा।

जब तक उसके बुजुर्ग चाचा को पता चलता कि क्या हुआ है, नूपा लाल झील के ठंडे पानी में कूद पड़ा। जब तक चाचा झील के किनारे तक पहुंचे नूपा लाल और चाँद, दोनों ही झील के ठंडे पानी में समा गए थे।

क्या उस रात चाँद सचमुच झील में डूब गया था? ये तो कहना मुश्किल होगा। शायद नहीं। पर गद्दी बिल्कुल मानते हैं कि उस रात चाँद सच में डूबा था और जो पानी झील से बाहर छलक कर निकला उससे **चंद्रा नदी** का उद्गम हुआ।

और वो झील - **चंद्रताल** - वो आज भी उतनी ही सुंदर है। खास कर पूर्णिमा की रातों में।

अगर कभी पूर्णिमा की रात को चंद्रताल पहुंचने का नसीब हो, तो ध्यान से सुनना, कभी-कभी नूपा लाल की बांसुरी पूर्णिमा की रातों में झील किनारे सुनाई देती है!

बिच्छू बूटी की सेना

गर्मियों में शायद ही कोई जगह लाहौल जितनी सुंदर होगी। गर्मियों में लाहौल घाटी बिल्कुल जन्नत बन जाती है। खेतों के किनारों पर फूलों के कालीन बिछ जाते हैं, ठंडे-ठंडे पानी के झरने हर जगह बहते हैं और इन्हीं सब के बीच से प्रबल **चंद्रभागा** बहती हुई।

आश्चर्य की बात नहीं कि इतनी सुंदर घाटी पर आक्रमणकारियों की बुरी नजर कभी पड़ी होगी।कहते हैं कि एक बार आक्रमणकारियों ने इस घाटी पर आक्रमण करने का षड्यंत्र रचा।

उन्होंने सोचा कि पहले एक गाँव पर कब्जा करेंगे और वहाँ से बाकी की घाटी को अपने नियंत्रण में करने के लिए आगे बढ़ेंगे।

पर किस गाँव पर पहले कब्जा किया जाए, इस सवाल ने उन्हें उलझा दिया था।जासूसों का एक छोटा दल निरीक्षण करने निकला।

उनका लक्ष्य था कि वो ऐसा एक गाँव ढूंढ लें जिस पर वो पहले हमला कर सकें। बहुत घूमने के बाद उन्होंने

गुशाल गाँव चुना।

गुशाल में इतने खेत थे कि पूरी फौज साल भर बैठ कर आराम से खा सकती थी। पानी भी खूब सारा था और सर्दियों में धूप भी अच्छी होती थी। जासूसों ने सोचा कि वो गुशाल पर पहाड़ों के पीछे से आकर अचानक हमला बोल देंगे और गाँव वालों को कुछ करने का मौका ही नहीं मिलेगा।

योजना ऐसी बनी कि कुछ चुनिंदा सैनिक पैदल जा कर रात खुलने से पहले ही हमला कर देंगे। उनका इशारा देख कर बाकी सेना आगे बढ़कर गाँव पर कब्जा कर लेगी। गुशाल गाँव के चारों तरफ अलग-अलग प्रकार के जंगली पौधे और घास के मैदान थे। इनमें **बिच्छू बूटी** के कई सारे गुच्छे भी थे। बिच्छू बूटी के पत्तों को उबालकर बड़ा स्वादिष्ट **थुकपा** बनता है। पर बिच्छू बूटी के पत्तों को स्पर्श करते समय दस्ताने पहनना जरूरी है। कहीं गलती से पत्तों का त्वचा से स्पर्श हो जाए तो ऐसी खारिश हो जाती है कि अच्छे-अच्छों को नानी याद आ जाए।

ये बात सभी स्थानीय लोगों को तो पता थी, लेकिन आक्रमणकारियों को इस बात की जानकारी कैसे होती? रात के अंधेरे में सैनिकों का एक दल गाँव पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा। झाड़ियों में चलते-छिपते सैनिक सीधे बिच्छू बूटी के पौधों के बीच में घुस गए।

पीयूष सेखसरिया द्वारा चित्रण

बस कुछ पल की बात थी... सारे सैनिक खारिश करने लगे। खारिश से राहत तो दूर की बात थी, कुछ देर में सारा दल खुजली करते हुए ज़मीन पर लंबा हो गया। दल के मुखिया ने कहा, "अगर इस गाँव के पौधे इतना काटते हैं, तो सोचो इस गाँव के लोग कितने खतरनाक होंगे।" मुखिया की बात सुनकर सैनिक दल वहां से भागने लगा। देखते ही देखते सभी सैनिक गाँव से गायब हो गए। सैनिकों ने लौट कर पूरी घटना अपने सेनापति को सुनाई। तब सबने मिलकर यह निर्णय लिया कि उनकी भलाई इसी में है कि लाहौल पर कब्ज़ा करने का ख्वाब भूल कर लौट जाएं।

सुबह जब गुशाल गाँव के लोग उठे तब उन्हें कोई खबर ही नहीं थी कि उस रात क्या हुआ। सब कुछ हर रोज़ की तरह चल रहा था। उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनकी बिच्छू बूटी की सेना ने उस रात एक बड़े ही नापाक योजना लेकर आयी सेना को विफल कर दिया था।

चंद्रभागा नदी, जिसे चिनाब के नाम से भी जाना जाता है, लाहौल की चंद्रा और भागा घाटियों से निकलने वाले पानी के संगम से निकलती है। इसका संगम लाहौल के तांदी में है।

गुशाल लाहौल में चंद्रा के तट पर बसा एक खूबसूरत गाँव है।

बिच्छू बूटी एक पौधे की किस्म है जो हिमालय सहित दुनिया भर में व्यापक रूप से उगती है। यह कई औषधीय गुणों के लिए जानी जाती है। छूने पर यह त्वचा में खारिश पैदा करती है।

थुकपा एक तिब्बती नूडल सूप है, जिसे लद्दाख, लाहौल और स्पीति सहित कई हिमालयी क्षेत्रों में तैयार किया जाता है और इसका आनंद लिया जाता है।

खिराव गोम्पो दोरजे

गोम्पो दोरजे बहुत साहसी था। उसे शिकार का बड़ा शौक था। **नाबो** और **तंगरोल** जैसे जंगली जानवरों का शिकार वो अकेला ही कर लेता था। एक जंगली जानवर के शिकार से वो कई दिनों तक अपना पेट भरता था। उसने बचपन से **शेन** को दूसरे जंगली जानवरों का शिकार करते देखा था।

शेन की तरह ही वो जानवरों को चौंका देता था, फर्क सिर्फ इतना था कि वो शिकार के लिए अपने धनुष और बाण का इस्तेमाल करता था। वो **किब्बर** गाँव से कुछ दूर अकेला रहता था और पास के सारे पठारी क्षेत्र में पैदल घूमा करता था। किब्बर के लोग उसे खिराव गोम्पो दोरजे के नाम से जानते थे - खिराव यानी

शिकारी - क्योंकि वे सब उसके शिकार करने के हुनर के प्रशंसक थे।

खिराव गोम्पो दोरजे अकेले रहना पसंद करता था। पर उसकी एक खास आदत थी। जब भी वो किसी जानवर का शिकार करता तो उसका चार हिस्सों में विभाजन करता। तीन हिस्से अपने लिए रख कर एक हिस्सा वो **लामाजी** को दे आता।

ये लामाजी **बंदी-फ़राह** के सामने एक गुफा, जो बिलकुल **दांग** से लग कर थी, में हमेशा ध्यान किया करते थे। कोई छोटे दिल वाला यहां कभी नहीं पहुंच पाता। एक कदम चूके तो सीधे खाई में गिरने का डर था। बहुत कम लोग लामाजी के दर्शन के लिए जाते थे। गोम्पो दोरजे लामा के पास सबसे नियमित रूप से जाता था। वो लामा के लिए लाया हुआ मांस गुफा के प्रवेश द्वार पर रखकर निकल जाता।

लामाजी इस उपहार को स्वीकार करते और उसका सेवन करके हड्डियां गुफा के द्वार पर फेंक देते।

नाबो एक हिमालयी जंगली भेड़ होता है जिसके सींग पीछे की ओर मुड़ते हैं। इसे किन्नौर, स्पीति, लाहौल और लद्दाख में देखा जा सकता है।

तंगरोल लंबे, मोटे सींगों और दाढ़ी वाला एक जंगली पहाड़ी बकरा होता है, जो पिन वैली सहित लाहौल और स्पीति के कुछ हिस्सों में पाया जाता है।

शेन स्पीति में हिम तेंदुए को शेन भी कहा जाता है।

किब्बर स्पीति घाटी का एक गाँव है जो पहले व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र होता था।

लामा बौद्ध भिक्षु को कहते हैं।

बंदी-फ़राह किब्बर के पास एक खूबसूरत खाई है। खिराव गोम्पो दोरजे की गुफा आज भी इस जगह से दिखाई देती है।

दांग चट्टान के लिए स्पिटियन शब्द है।

गोम्पो दोरजे और लामा के बीच ये क्रम कई सालों से चला आ रहा था। पर वक़्त सभी का बदलता है - और कई बार अच्छे वक़्त के बाद बुरा वक़्त भी आता है। एक समय गोम्पो दोरजे को भी मुश्किल दौर का सामना करना पड़ा। हफ्तों तक कोई शिकार हाथ नहीं लगा, एक छोटा खरगोश भी नहीं! गोम्पो दोरजे सोचता रहा कि क्या किया जाए। फिर अचानक उसे एहसास हुआ कि शायद उसे लामाजी के दर्शन करके उनकी राय लेनी चाहिए।

भूख से बेहाल होने के बावजूद गोम्पो दोरजे ने लामाजी की गुफा तक चलने का साहस किया। गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुंचते ही उसकी नजर वहाँ गिरी हड्डियों पर पड़ी। हर तरफ हड्डियों का ढेर! ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ किसी ने हड्डियों का कालीन बिछा दिया था।

तभी उसे ध्यान आया कि अगर लामाजी ने इतना मांस खाया है, तब उसने खुद इससे बहुत अधिक मांस खाया होगा। गोम्पो दोरजे का दिल भर आया। बिना कुछ सोचे उसने वहीं से छलांग लगा दी। पहाड़ी समुदाय मानते हैं कि जब कोई दिल से अपनी गलतियों के लिए शर्मिंदा होता है तब उसे माफी मिल जाती है और वह मोक्ष के रास्ते पर निकल जाता है। गोम्पो दोरजे खाई में गिरते-गिरते हवा में तैरने लगा और आसमान की ओर जाने लगा। लामाजी अपने आसन से ये सब देख रहे थे। उनके मन में एक विचार आया, अगर गोम्पो दोरजे जैसे तुच्छ शिकारी को मोक्ष का रास्ता मिल सकता है तो उनके जैसे परम पूज्य लामा को भी तो मोक्ष प्राप्ति होनी चाहिए।

ऐसा सोच कर वो अपने आसन से उठे और खाई में छलांग लगा दी। पर उनके अपने अहंकार का वजन इतना ज्यादा था कि वो सीधे खाई में गिर गए और उसके बाद फिर कभी किसी को नजर नहीं आए।

नवांग तन्खे द्वारा चित्रण

पीयूष सेखसरिया द्वारा चित्रण

अकेला पेड़

बिशन सिंह के सपने आखिर सच हो रहे थे। उसने अपनी पढ़ाई अभी खत्म ही की थी कि उसकी सरकारी टीचर की नौकरी लग गई। उसने यही चाहा था परन्तु एक छोटी सी मुश्किल थी। उसकी पहली पोस्टिंग **काज़ा** में हुई थी। स्पीति तब पंजाब का हिस्सा होता था और काजा का नाम लोगों ने बस सुना ही था।

स्पीति के बारे में लोगों के मन में एक डर सा था। स्पीति था भी इतनी दूर कि शायद ही कोई वहां तक पहुंचा था। स्पीति के बारे में कई मिथक प्रचलित थे। उन दिनों बस मनाली तक ही चलती थी। मनाली से आगे सारा रास्ता पैदल चलना पड़ता था। रोहतांग ला पार करके **ग्रामफू** और **बातल** होते हुए आपको कुंजुम टॉप आना पड़ता था। फिर करीब 100 कि.मी. का लम्बा रास्ता तय करके आप लोसर पहुँचते थे। काजा यहां से और 60 कि.मी. आगे था!

बिशन को अपने परिवार को पीछे छोड़ जाने का थोड़ा गम था। पर वो इस नए मौके को लेकर बहुत उत्साहित भी था। उसको पहाड़ों का बहुत शौक था और पहाड़ों में रहने का इससे अच्छा मौका शायद ही मिलता। उसने अपना सारा सामान बांध लिया - कई सारे गरम कपड़े भी साथ ले लिए। एक झोला तो बस खाने से ही भरा हुआ था। इतना लम्बा पैदल रास्ता जो तय करना था।

बिशेन स्कूल शुरू होने से दस दिन पहले निकला ताकि वो काजा, ठीक समय से पहुंच सके। ग्रामफू से आगे का रास्ता बड़ा ही सुहाना था। **डोर्नी** नाले के पास **ताकपा** के जंगल बहुत सुंदर लग रहे थे।

इतने सारे झरने थे कि उसे कभी दूरी का एहसास ही नहीं हुआ। ये जगह इतनी सुंदर थी कि हर कुछ देर बाद वो चलते-चलते रुक जाता ताकि उन वादियों को जी भर कर देख सके। गर्मी के दिन थे और सारे रास्ते में गद्दी चरवाहों के डेरे लगे हुए थे। गद्दी भाई हमेशा किसी भी मेहमान का बड़े प्यार से स्वागत करते हैं।

लोगों से बात करके उनको देश-दुनिया की खबरों का पता चलता है। बिशन की इस पैदल यात्रा की पहली कुछ शामें गद्दियों के साथ बीतीं। हर डेरे में बिशन का स्वागत बकरी के दूध से बनी मीठी चाय से होता। शाम के खाने में गरम-गरम रोटियां, घी और कढ़ी!

बिशेन ने ग्रामफू से बातल के सफर में खूब मजे किए। पर यहां से आगे का सफर लंबा था क्योंकि अब गद्दी पीछे छूट गए थे। कुंजुम टॉप पहुंचने में एक और दिन लगा और आखिर में वो स्पीति के पहले गाँव, लोसर, पहुंच गया।

जिस चीज पर बिशन का सबसे पहले ध्यान गया वो यह था कि स्पीति में पेड़ नहीं के बराबर थे। पानी के झरने छोटे होने लगे थे और लोसर पहुंचने तक बिशन को इक्का-दुक्का पेड़ ही नजर आया था।

एक पल के लिए तो उसे ऐसा लगा जैसे वो किसी अनजान ग्रह पर पहुंच गया था।

वो अविश्वास से धीरे चलने लगा। उसे यह समझ ही नहीं आ रहा था कि इतने विशाल पहाड़ों पर एक भी पेड़ कैसे नहीं था! वो सोच रहा था जाने किसने पहाड़ों से सारे पेड़ और हरियाली चुराई होगी?

ऐसी जगह में रहना उसे अब नामुमकिन लग रहा था। पर वो कर भी क्या सकता था, उसका घर यहां से सैकड़ों मील दूर था। अचानक उसे लगा जैसे वो ऐसी जगह फंस गया है जहां से निकलना नामुमकिन है।

चलते-चलते वो **सुमलिंग** गाँव पहुंच गया जो काजा से महज 15 कि.मी. दूर था। सुमलिंग में एक बहुत बड़ा **विलो** का पेड़ था। उस अकेले पेड़ को देख कर बिशन से रहा नहीं गया। उस विशाल पेड़ के पास जाकर वो पेड़ से गले लगकर लिपट गया। फिर बिशन फूट-फूट कर रोने लगा और रोते रोते उसने पेड़ से पूछा, "मैं तो अपने परिवार का पेट पालने की मजबूरी में यहां पहुंचा हूँ, पर तेरी ऐसी कौन सी मजबूरी थी जो तुझे यहां आकर बसना पड़ा?"

बिशन का रोना सुनकर सारा गाँव वहां पहुंच गया। दो आत्मीय दोस्तों के बीच चल रही इस बातचीत में खलल डालने की गुस्ताखी किसी ने नहीं की।

काजा स्पीति का मुख्य शहर और स्पीति उपमंडल का मुख्यालय है।

ग्रामफू और **बातल** मनाली से काजा के रास्ते में पड़ने वाले स्थान हैं।

ताकपा इसे बिर्च के नाम से भी जाना जाता है, यह एक पतली पत्ती वाला कठोर लकड़ी का पेड़ है। इसकी छाल आमतौर पर पतली परत में छीली जाती है, खासकर युवा पेड़ों की। इस पतली परत का उपयोग पारंपरिक रूप से कई उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में कागज के रूप में किया जाता था। कई पवित्र धर्म ग्रंथों को ऐसी छाल की पतली परत पर लिखकर संरक्षित किया गया है।

डोर्नी नाला मनाली से काजा के रास्ते में एक ऐसा स्थान है जहां अभी भी बहुत सारे ताकपा (बर्च) के पेड़ मिल सकते हैं।

सुमलिंग स्पीति नदी के दाहिने किनारे पर एक खूबसूरत गाँव है।

विलो लंबी पतली शाखाओं वाला पेड़ जो अक्सर पानी के पास उगता है। सुमलिंग गाँव में आज भी वो अकेला विलो का पेड़ सड़क के किनारे देखा जा सकता है।

स्पीति का सबसे समृद्ध गाँव

मोरंग में सिर्फ पांच घर हैं, पर सब जानते हैं कि यह स्पीति का सबसे समृद्ध गाँव है। सब **मेमे** छुकपो की बदौलत। मेमे छुकपो स्पीति के सबसे चतुर व्यापारी थे। पैसे कमाने के छोटे से छोटे अवसर को मेमे बड़ी आसानी से सूंघ लेते थे।

मेमे ने **चांग्पा** लोगों को कई याक बेचे थे और हर साल **लवी मेले** में उसके **चुमुर्ती घोड़े** सबसे ज्यादा कीमत में बिकते थे। व्यापार के लिए मेमे बहुत घूमते थे। वैसे तो मेमे का दिल बहुत बड़ा था, पर उन्हें कर्जा मांगने वाले लोगों से बड़ा डर लगता था। हमेशा कोई ना कोई उनसे कर्जा माँगने की ताक में रहता था। पर मेमे ने इस पेंच से निकलने की एक जोरदार तरकीब सोची हुई थी। हर बार मेमे कहीं से सौदा कर के घर लौटते तो वो आसमान की तरफ देखते। अब अगर आप कभी स्पीति आए हो तो सबसे पहले आप की नजर में ये बात आएगी कि यहां आसमान में कितने कम बादल दिखते हैं। खासकर गर्मी में तो मुश्किल से इक्का-दुक्का बादल ही दिखेंगे। मेमे ऐसा एक अकेला बादल ढूंढते। फिर खर्चे के लिए कुछ पैसे अपनी जेब में रख कर वो अपनी सारी कमाई को बादल के नीचे एक गड्ढा बनाकर छिपा देते।

मेमे ने सोचा कि गाँव में कौन सोच सकेगा कि उनकी सारी पूंजी बादल के नीचे रखी है। और किसी दिन पैसे की जरूरत पड़ी तो बस गड्ढा खोद लो... मेमे छुकपो पैसा कमाने में सारा जीवन इतना व्यस्त रहे कि उन्होंने जिंदगी की छोटी-छोटी खुशियों का मजा ही नहीं लिया था।

ना कभी उगते सूरज को देखा... ना कभी किसी चिड़िया का गाना सुना। और तो और कभी ये भी गौर नहीं किया कि बादल खुले आसमान में कैसे चलते हैं।

मेमे एक उपाधि है जिसका उपयोग स्पीति में हर कोई अपने दादा या बुजुर्ग व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए करता है।

चांग्पा शब्द चांगथांग के निवासियों के लिए प्रयोग किया जाता है। चांगथांग तिब्बत के उत्तरी भाग और लद्दाख के पूर्वी भाग का एक क्षेत्र है। चांग्पा एक खानाबदोश समुदाय है जो प्रसिद्ध पश्मीना पैदा करने वाली बकरियां पालने के लिए जाना जाता है। स्पीति के लोगों के साथ उनके प्राचीन व्यापारिक संबंध रहे हैं।

चुमुर्ती घोड़े स्पीति के घोड़े की एक स्थानीय नस्ल है। यह एक बहुत ही मजबूत प्रजाति मानी जाती है, विशेष रूप से उच्च ऊंचाई के लिए अनुकूलित।

लवी मेला एक वार्षिक व्यापार मेला है जो कई सदियों से रामपुर-बुशहर में आयोजित किया जाता रहा है। व्यापार मेले पूरे हिमाचल प्रदेश में बहुत लोकप्रिय थे और अब भी हैं।

अब अगर कोई मेमे छुकपो से कर्जा मांगने आता तो मेमे मुस्कुरा देता और कहता, "भाई मेरे, मैं तुम्हारी मदद जरूर करता, पर क्या करूं घर में बिल्कुल पैसे नहीं हैं।" मेमे को इस बात की तसल्ली थी कि वो झूठ नहीं बोल रहे थे। उनकी सारी पूंजी तो बादलों के नीचे सुरक्षित थी।

मेमे अपनी सारी जिंदगी इसी नुस्खे के सहारे जीते रहे और एक दिन मेमे चल बसे।

उनकी सारी जमा पूंजी वहीं बादल के नीचे फंसी रह गयी। एक दिन गाँव के कुछ बच्चे खेल-खेल में गड्ढा बना रहे थे तो उन्हें पैसे से भरा झोला मिला। शायद मेमे छुकपो के कई झोलों में से यह एक था, जिसे उन्होंने बादल के नीचे छुपा के रखा था।

मोरंग के पास कुछ लोग आज भी इसी आस में गड्ढा खोदते हैं कि उन्हें भी मेमे का छुपाया हुआ धन से भरा एक झोला मिल जाए!

पीयूष सेखसरिया द्वारा चित्रण

मोमो पार्टी

उस दिन **लालुंग** के लोग बड़े ही असमंजस में थे। आम तौर पर इस गाँव में जीवन बड़े आराम से चलता था, पर आज नहीं। पता नहीं चल रहा था कि हुआ क्या था। मैंने अपने पड़ोसी, सोनम छेरिंग से पता किया।

"गाँव वाले आज याक देखने जा रहे हैं। सारे याक कल **किबरी** के बड़े मैदान में थे। **याकज़ी** ने खुद याक के झुंड को वहां देखा था। कल शाम को वो भागते हुए लौटे थे और चिल्ला रहे थे कि एक याक पागल हो गया है।" ऐसा कह कर वो ज़ोर ज़ोर से हंसने लगा। इन गाँवों में लोग भेड़, बकरी, गधे, घोड़े और गाय पालते थे।

लेकिन कई कारणों से सबसे महत्वपूर्ण जानवर याक था। तगड़ा याक खेतों की जुताई के लिए एक उत्कृष्ट सहायक था। याक की ऊन और याक का गोबर अत्यधिक सर्दियों के महीनों में गर्मी का एक अनमोल

स्रोत थे। और नसीब से अगर आपके याक की पूंछ सफेद निकली तो पूंछ की ही कीमत कम से कम 10,000 रुपये थी। टकपा—हमारे एक अन्य पड़ोसी— ने हाल ही में मनाली के एक व्यापारी से एक याक खरीदा था।

इस बूढ़े याक ने अपनी पूरी जिंदगी पर्यटकों के साथ तस्वीरें खिंचवाने में बिताई थी। जिंदगी भर उसके मालिक ने उसे **माल रोड** पर खड़ा करके रखा था और वहीं उसे सुबह-शाम खाना दे दिया करता था।

पर स्पीति में याक को ऊंचे पहाड़ी मैदानों पर खुला छोड़ दिया जाता है ताकि वो मजे से खुद घास चर सके। इस तरह स्पीति में याक को दिन भर घास ढूंढते हुए चलना पड़ता है।

"आज मोमो पार्टी है, सब के लिए मीट मोमो बने हैं," सोनम छेरिंग ने बताया। मोमो तो सिर्फ खास मौके पर बनाए जाते थे।

अब इन याक महाशय को चलने की बिलकुल आदत नहीं थी। वो दिन भर एक जगह चौकड़ी जमा कर बैठा रहता, फिर भले ही भूखा रहना पड़े। भूख की वजह से वो चिड़चिड़ा सा हो गया।

ऐसे में कोई अगर गलती से उसका रास्ता काट देता तो वो उसे सींग मारने उसके पीछे पड़ जाता। कल बिचारे याकज़ी की बारी थी, पर वो बाल-बाल बच गए। इसलिए आज गाँव के मर्द इस बूढ़े याक को पकड़ने की तैयारी कर रहे थे। उसे पकड़ने में गाँव के लोगों को पूरा दिन लग गया।

गाँव में लाकर याक को **थांगरा** में बंद कर दिया गया ताकि वो फिर से किसी को तंग ना करे। उस दिन से मैं रोज याक को अपनी खिड़की से देखता था।

जब भी वो मुझे देखता तो अपने दांतों को रगड़कर एक अजीब आवाज निकालता था। कुछ दिनों में मैं दिन या रात के किसी भी समय उस अजीब आवाज़ को सुनने का आदी हो गया था।

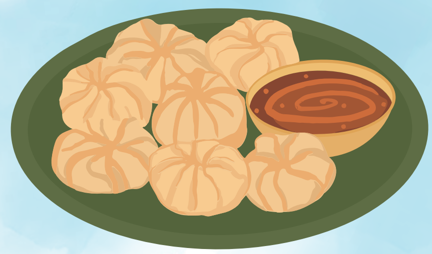

फिर एक शाम जब मैं गाँव पहुंचा तो गाँव में खुशी की एक लहर थी। "आज **मोमो** पार्टी है, सब के लिए मीट मोमो बने हैं," सोनम छेरिंग ने बताया। मोमो तो सिर्फ खास मौके पर बनाए जाते थे। सब ने मन भर के मीट मोमो खाए। मोमो खाकर मैं और सोनम छेरिंग घर की तरफ निकल गए । चांदनी रात थी। जैसे ही हम घर के पास पहुंचे मुझे अचानक से लगा जैसे कुछ लापता था। "याक कहां चला गया", मैंने चौंक कर पूछा।

"वो हमारे मीट मोमो का मीट बन गया", सोनम छेरिंग बोला। सोनम के चेहरे पर शरारत भरी मुस्कान थी। मेरे पेट में थोड़ी हलचल हुई। एक पल के लिए ऐसा लगा मानो याक मेरे पेट के अंदर अपने दांत रगड़ रहा हो!

लालुंग स्पीति में लिंगती घाटी के अंदर का एक गाँव जो स्पीति नदी के बाएं किनारे पर पड़ता है।

किबरी लिंगती घाटी के अंदर का एक छोटा सा गाँव जहां केवल पैदल ही पहुंचा जा सकता है।

याकज़ी एक याक चरवाहा। पहले स्पीति के अधिकांश गाँवों में याकजी हुआ करते थे।

माल रोड अधिकांश हिल स्टेशनों पर मुख्य बाज़ार सड़क, जहां पर्यटकों के लिए बहुत सारे आकर्षण देखने को मिल सकते हैं।

थांगरा घरेलू पशुओं को रखने के लिए बनाया गया एक छोटा सा बाड़ा। आमतौर पर थांगरा किसी के घर के ठीक बाहर बनाया जाता है।

मोमो भाप में पकाये हुए एक प्रकार के भरवां पकौड़े। यह हिमालयी क्षेत्र का बहुत लोकप्रिय व्यंजन है और आमतौर पर विशेष अवसरों पर बनाया जाता है।

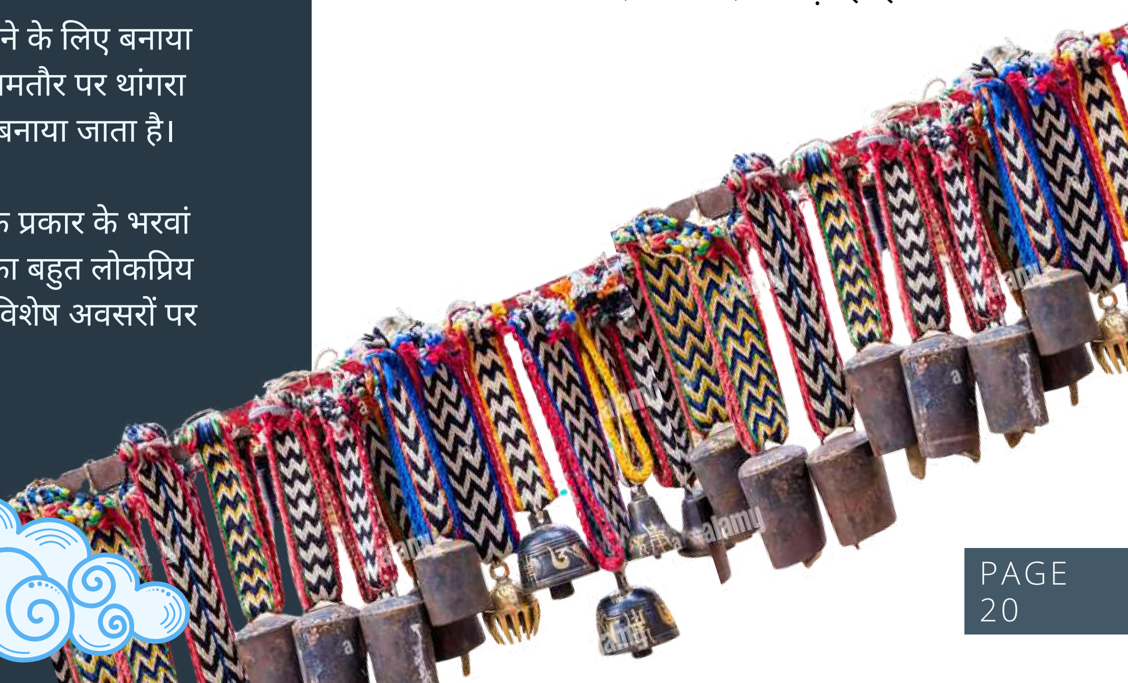

नवांग तन्खे द्वारा चित्रण

कुत्ता और भेड़िया

कुत्ता और भेड़िया भाई थे। लंबे समय तक वे खुशी-खुशी साथ रहा करते थे, लेकिन एक दिन ईर्ष्या उन पर हावी हो गई। किसी भी चरवाहे से पूछो, और वे आपको बता देंगे कि यह कैसे हुआ।

कुत्ते और भेड़िये में ऐसे गुण थे जो उन्हें जंगल में जीवित रहने में मदद करते थे। भेड़िया एक चालाक धावक था जो लंबी दूरी तक दौड़ सकता था, जबकि कुत्ते को सूंघने की शक्ति का वरदान मिला था।

साथ में, वे एक दूसरे के पूरक थे। कुत्ता दूर से शिकार को सूँघता था, जबकि भेड़िया आगे निकलकर शिकार का पीछा करता था। वे शिकार से प्राप्त होने वाली लूट को आपस में बांटते थे और शायद ही कभी बिना भोजन के रहते थे।

हालांकि, एक सवाल उन्हें परेशान करता था - अगर कोई दूसरा किसी कारण से गायब हो जाए तो वे अकेले कैसे जीवित रहेंगे? इसलिए, कुत्ते और भेड़िये दोनों ने एक समझौता किया: एक दूसरे के कौशल को सीखने में एक दुसरे की मदद करना।

सबसे पहले भेड़िये की बारी थी। वह बहुत धैर्यवान शिक्षक था। उसने कुत्ते को ऐसी हर वह तरकीब सिखाई जिससे उसे तेज दूर तक दौड़ने में मदद मिलती थी। समय के साथ कुत्ते ने भेड़िये की सीख का पालन किया और एक अच्छा धावक बन गया।

हालांकि, एक सवाल उन्हें परेशान करता था - अगर कोई दूसरा किसी कारण से गायब हो जाए तो वे अकेले कैसे जीवित रहेंगे? इसलिए, कुत्ते और भेड़िये दोनों ने एक समझौता किया: एक दूसरे के कौशल को सीखने में एक दुसरे की मदद करना।

अब कुत्ते की बारी थी कि वह भेड़िये को सूंघने की कला सिखाए। कुत्ता भेड़िये को प्रशिक्षित करने में धीमा था, जबकि भेड़िया सीखने में चुस्त था। जल्द ही भेड़िया कम दूरी पर मौजूद शिकार को सूंघना सीख गया। कुत्ते ने भेड़िये को जल्द ही अंतिम तरकीब सिखाने का वादा किया। लेकिन यह सब मात्र एक दिखावा था।

जब भेड़िया अगली सुबह उठा, तो उसका यह देखकर दिल टूट गया कि उसका भाई वास्तव में भाग गया था और उसने एक नए साथी के साथ दोस्ती कर ली थी। असल में कुत्ते ने भागकर आदमी से दोस्ती कर ली थी, सिर्फ इसलिए कि उसे अपना बेशकीमती कौशल अपने भाई के साथ साझा न करना पड़े।

तब से, पशुधन पालने वाले चरवाहे भेड़ियों द्वारा अपने पशुधन को उठाने से बचाने के लिए पहरेदार कुत्ते रखते हैं। लेकिन भेड़िये अक्सर पशुओं को उठाने में कामयाब हो जाते हैं, जिसके बारे में चरवाहों का मानना है कि यह कुत्ते के अधूरे वादे की भरपाई को पूरा करने का प्रयास है।

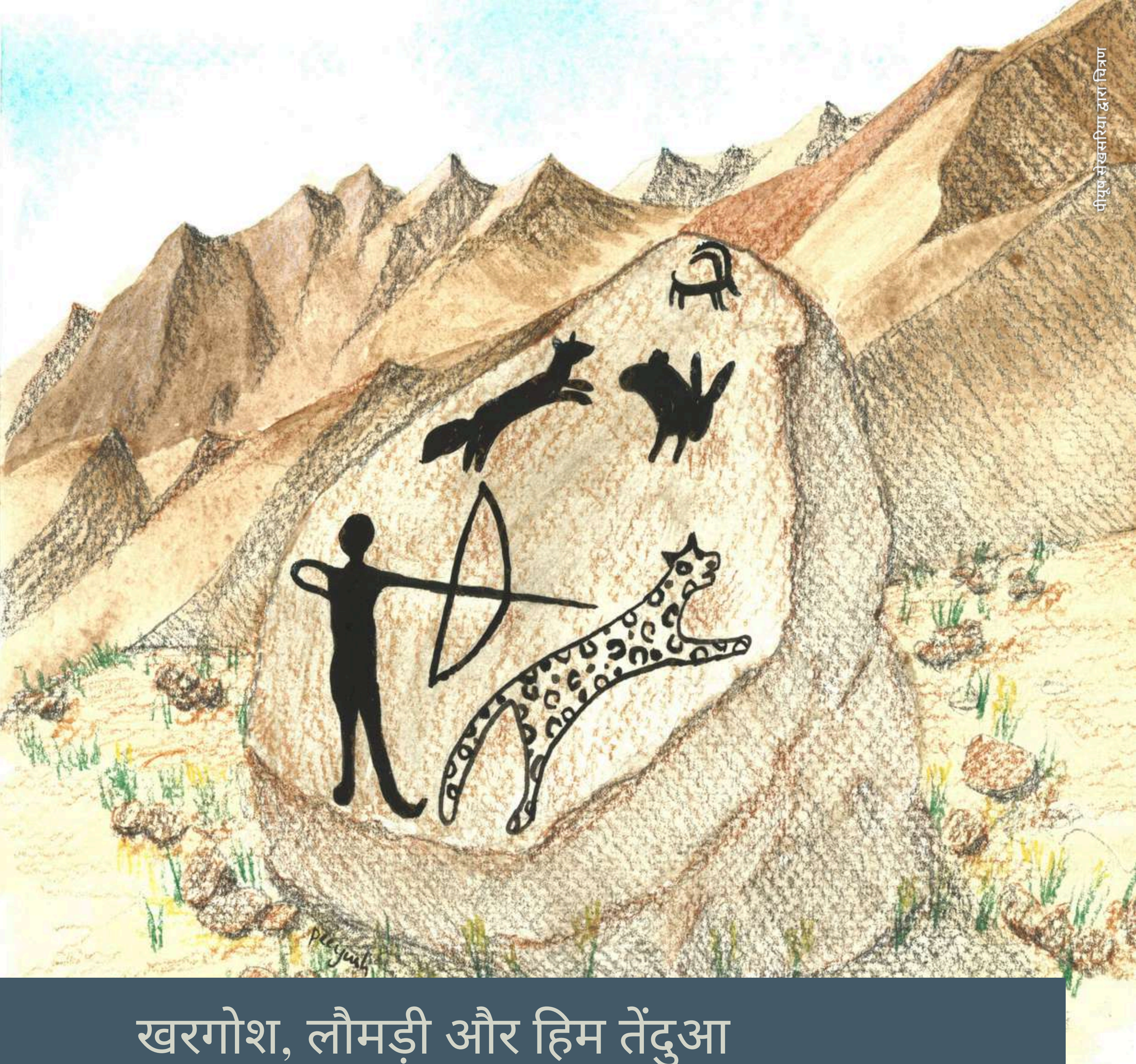

पीयूष सेखसरिया द्वारा चित्रण

खरगोश, लौमड़ी और हिम तेंदुआ

एक बार, एक खरगोश, एक लोमड़ी और एक हिम तेंदुआ था। वे पिन घाटी के जंगली चरागाहों में एक साथ रहते थे। हिम तेंदुआ जानवरों का शिकार करने के बाद उनका खून पीकर नशा करता था जो उसे बहुत पसंद था, ठीक वैसे ही जैसे मनुष्य शराब पीकर नशा करते हैं। चूँकि हिम तेंदुआ सभी जानवरों में सबसे ताकतवर था, इसलिए वह लोमड़ी और खरगोश से सारा काम करवाता था। दूसरे जानवर इससे तंग आ गए थे और उन्होंने हिम तेंदुए से छुटकारा पाने का फैसला किया। एक दिन, इंसानों के गाँव में एक शादी थी और जानवर इंसानों के खाने और शराब में हिस्सा लेने और पार्टी का आनंद लेने के लिए गाँव में चले गए।

जब पार्टी पूरे जोश में थी, तो खरगोश और लोमड़ी ने कुछ गहने पहने और नाचना शुरू कर दिया। जल्द ही, सभी जानवर नाचने लगे।

हिम तेंदुआ सभी जानवरों में सबसे ज्यादा नशे में था और उसने ज़ोर-ज़ोर से गाना शुरू कर दिया। उसने इतनी ज़ोर से गाया कि उसके गाने ने ग्रामीणों का ध्यान उसकी ओर खींच लिया। खरगोश और लोमड़ी एक-दूसरे को शरारती अंदाज़ में देखकर मुस्कुराए। यह उनका मौका था। उन्होंने एक बहुत लंबी बंदूक ली और उसे हिम तेंदुए पर तान दिया।

गाँव वालों की नज़र जानवरों द्वारा फैलाई हुई गंदगी पर पड़ी: खाना, शराब, बिखरे हुए गहने और साथ ही नशे में धुत, हिम तेंदुआ। यह देखकर गुस्से में गाँव वालों ने हिम तेंदुए को मार डाला। जबकि लोमड़ी और खरगोश वहाँ से भाग कर तेंदुए के आतंक से आजाद हो गए।

बेशक, स्पीति में अब हिम तेंदुए हमारे लिए बहुत कीमती हैं और हम में से कोई भी उन्हें कभी नुकसान नहीं पहुंचाएगा। लेकिन आप अभी भी स्थानीय लोगों को हिम तेंदुओं की कहानियां सुनाते हुए सुन सकते हैं जो खून पीना पसंद करते हैं और नशे में रहते हैं...

डा. जेन ओर्टन द्वारा साझा की गई कहानी

हिम तेंदुआ गाना गाते-गाते रुक गया। नशे की हालत में भी हिम तेंदुआ बंदूक को देख चुका था। वह डर के मारे वहीं जड़ हो गया। इस बीच, गाँव वाले भी वहाँ दौड़कर यह देखने आ गए थे कि आखिर इतना हंगामा क्यों हो रहा है।

लोमड़ी और खरगोश जल्दी से भाग गए, लेकिन चूँकि बंदूक हिम तेंदुए पर तनी हुई टिका कर रखी हुई थी, वह वहाँ से हिल नहीं सका था।

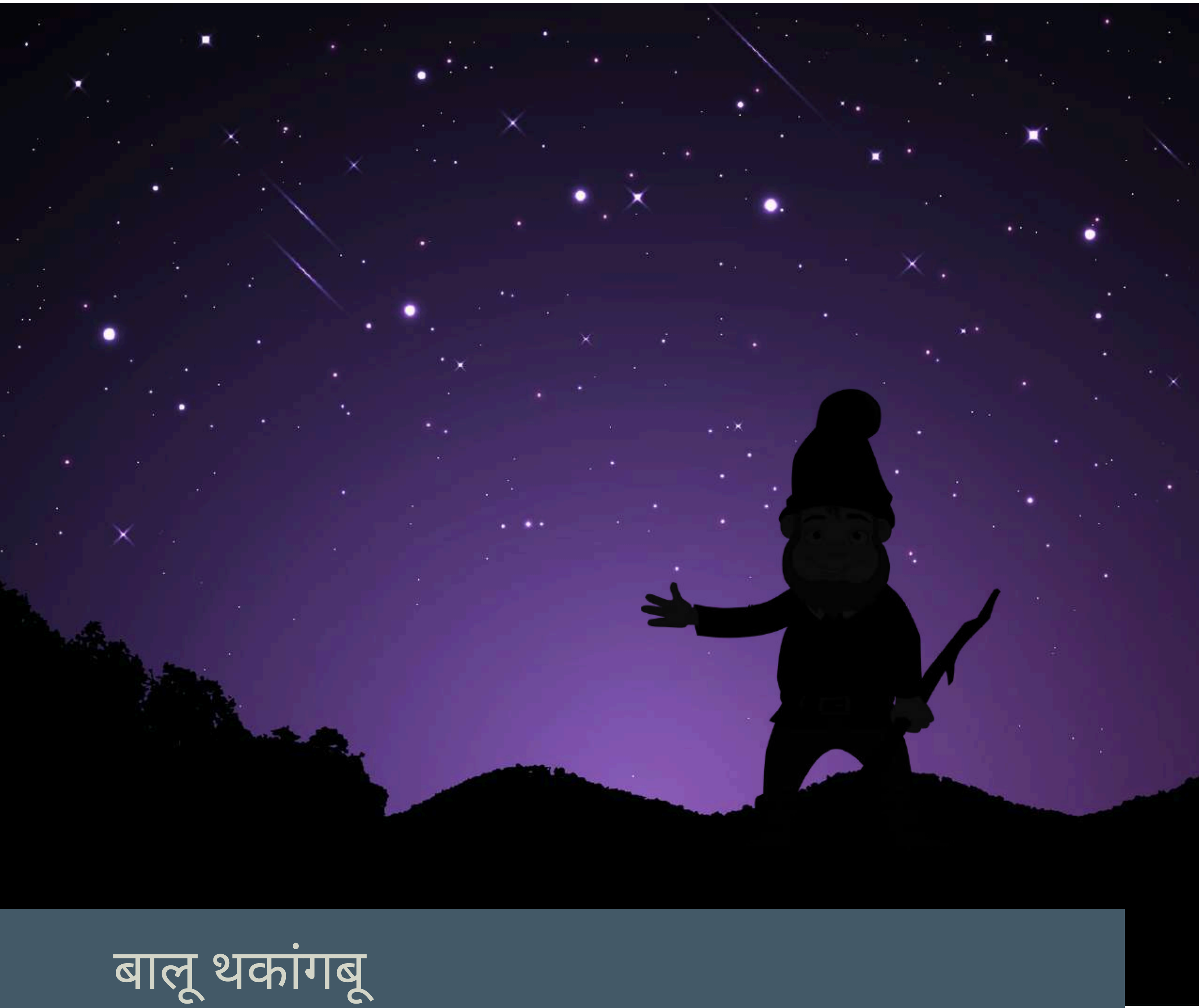

बालू थकांगबू

बालू थुकांगबू हिमालय में रहने वाला एक छोटा सा आदमी है। स्पीति क्षेत्र में, आपको **काजा** से किब्बर तक, **चिचम** से **ताशिगांग** तक, की से **बर** तक, **डेमुल** से **साग्नाम** तक उसकी कहानियाँ सुनने को मिलेंगी।

कोई भी निश्चित नहीं है कि बालू कहाँ रहता है। **पिन घाटी** के लोग कहते हैं कि बालू **बियुल** से आता है, एक गुप्त भूमि जहाँ केवल पवित्र लोग ही प्रवेश कर सकते हैं। किब्बर घाटी के लोग कहते हैं कि बालू गेटे गाँव के ठीक ऊपर स्थित एक जगह से आता है, लेकिन किसी ने उसे लंबे समय से देखा नहीं है।

बालू के बारे में कहा जाता है कि वह एक फुट लंबा है, साथ ही वह एक फुट ऊंची टोपी पहनता है और एक फुट ऊंची ही छड़ी लेकर चलता है।

वह सबकी इच्छाएं पूरी कर सकता है, लेकिन यह तभी सम्भव है जब कि उसे काबू में करके उसकी छड़ी और टोपी छीन ली जाए। हालांकि, यह कोई आसान काम नहीं है, क्योंकि बालू में भालू जितनी ताकत है।

उसका दिखाई देना बहुत मुश्किल है। कुछ लोगों का कहना है कि एक बार किसी ने अपनी आंख के किनारे से ऐसा मिलता जुलता कुछ देखा था जो कि उसके अनुसार शायद बालू था। कुछ का कहना है कि केवल पवित्र या भयभीत आत्मा वाले लोग ही उसे देख सकते हैं। हालांकि, लोग फिर भी कोशिश करते रहते हैं। शायद लोगों को अपनी मनचाही इच्छा पूरी होने का लालच है। कुछ लोग बालू को पकड़ने और उसे नौकर के रूप में रखने की भी कल्पना करते हैं।

लोगों की यह प्रबल धारणा है कि बालू को इस तरह पकड़ना या बंदी बनाना लगभग नामुमकिन है और बालू यह कभी पसंद नहीं करेगा । यदि ऐसा कभी हुआ तो बालू किसी ना किसी तरह भाग ही जायेगा और बंदी बनाने वालों को दंडित करेगा।कुछ लोगों के अनुसार पुराने समय में बालू **की तालाब** में खेलता था, जहां कुछ ग्रामीणों ने उसे पकड़ने की कोशिश की थी। उसके बाद से वह डर गया है और वह फिर कभी वापस नहीं आया। फिर भी पूरे स्पीति में लोगों ने अपनी कोशिश जारी रखी हुई है। सभी अपनी इच्छाओं के मोह में हैं ।

एक समय की बात है जब कुछ ग्रामीणों में से एक ने उसे पकड़ने में कामयाबी हासिल कर ली थी । फिर उसकी छड़ी और टोपी को इतनी ऊँची जगह पर रख दिया था कि वह उन तक पहुंच न सके।बालू को रसोई में नौकर के रूप में रखा गया और हल चलाने के समय, बालू को खेतों में मदद करने के लिए भेजा गया।

हल चलाना कठिन काम है और इसमें सभी की मदद की ज़रूरत होती है। गाँव वालों ने सुनिश्चित किया कि बालू हमेशा मदद के लिए उपलब्ध रहे। उसे खेती के उपकरण बनाए रखने और टूटी हुई चीज़ों को ठीक करने का काम सौंपा गया था।

पीयूष सेखसरिया द्वारा चित्रण

एक दिन हल की छड़ी टूट गई, इसलिए एक लड़के को नई छड़ी लाने के लिए गाँव वापस भेजा गया। लड़का जल्दी में था। उसने रसोई में एक ऊँची अलमारी पर रखी छड़ी देखी और उसे उठा कर खेत की ओर भागा। उसने वह छड़ी लाकर बालू, यानि उस एक फुट के छोटे आदमी को दे दी ताकि वह हल को ठीक कर सके। जैसा कि शायद आप अनुमान लगा चुके होंगे, लड़का गलती से बालू की छड़ी ले आया था। अपनी छड़ी वापस पाकर बालू भागने में सफल हो गया।

बालू अपने साथ हुए व्यवहार से नाराज़ था और उसने गाँव को शाप दे दिया। काज़ा से किब्बर तक, चिचम से ताशिगांग तक, की से बर तक, डेमुल से सग्नाम तक, लोग बालू द्वारा शापित गाँव के भाग्य के बारे में बात करते हैं। वे इस बात से सहमत हैं कि अपने आकार के बावजूद बालू दुर्जेय है।

फिर भी लोगों ने उसे पकड़ने की कोशिश बंद नहीं की है। शायद लोग अपनी चाहनाओं से बंधे हैं। कुछ लोग अभी भी उसकी एक झलक पाने की कोशिश करते हैं और चर्चा करते हैं कि अगर वह दिख गया तो वे उसे पकड़ने की क्या तरकीब लगाएंगे। अच्छा, आप बताएं कि आपने क्या सोचा है?

डा. जेन ओर्टन द्वारा साझा की गई कहानी

चिचम, ताशिगांग, की, डेमूल और **गेटे** स्पीति घाटी में स्थित गाँव हैं और ये स्पीति नदी के बाएं किनारे पर स्थित हैं।

पिन घाटी, स्पीति के अंदर की एक छोटी सी घाटी है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और मेहमाननवाज़ी के लिए जानी जाती है, बिल्कुल स्पीति के बाकी हिस्सों की तरह।

बर और सग्नाम, पिन घाटी में स्थित गाँव हैं।

की तालाब, की गाँव के पास का एक सुंदर तालाब है।

नवांग तन्खे द्वारा चित्रण

लाल लोमड़ी और याक:
दोस्ती और बदले की कहानी

एक बार की बात है, स्पीति की सुंदर घाटियों में एक चतुर लाल लोमड़ी और एक सौम्य याक रहते थे। लोमड़ी के पास ढेर सारी ताज़ी, हरी घास थी, जबकि याक के पास बदबूदार कचरे का ढेर था। एक दिन, जब वे जंगल में घूम रहे थे, तो वे गलती से एक-दूसरे से टकरा गए।

"ओह, सॉरी!" लोमड़ी ने कहा।
"कोई बात नहीं!" याक ने जवाब दिया।

जब वे बातें कर रहे थे, तो उन्हें एहसास हुआ कि उनके पास मौजूद चीज़ें उनके लिए कितनी बेकार हैं। लेकिन फिर, उन्हें एक बढ़िया विचार आया।

"क्यों न हम आपस में व्यापार करें?" लोमड़ी ने सुझाव दिया। "तुम्हारा कचरा मेरे बगीचे के लिए एकदम सही है, और मेरी घास तुम्हारे पेट के लिए एकदम सही है!" याक सहमत हो गया, और उन्होंने अदला-बदली कर ली।

"अगर तुम्हें कभी मदद की ज़रूरत हो, तो मुझे बताना, और मैं तुरंत वहाँ पहुँच जाऊँगी!"

इस साधारण आदान-प्रदान ने उन्हें अच्छा दोस्त बना दिया। फिर जब उनकी दोस्ती परवान चढ़ी, तो लोमड़ी ने याक से वादा किया, "अगर तुम्हें कभी मदद की ज़रूरत हो, तो मुझे बताना, और मैं तुरंत वहाँ पहुँच जाऊँगी!"

याक को शरारत सूझी और उसने लोमड़ी के वादे को परखने का फैसला किया। एक दिन चरते समय उसने आवाज़ लगाई, "लोमड़ी, मेरी मदद करो!"

लोमड़ी याक के पास दौड़ी-दौड़ी पहुंची, लेकिन उसने पाया कि याक हंस रहा है। "इस बार तुमने मुझे शरारत से बुला लिया, याक!" लोमड़ी ने हंसते हुए कहा, लेकिन वह थोड़ा नाराज भी थी।

अगली सुबह, जब याक घास चर रहा था, उस पर अचानक एक भयंकर भेड़िये ने हमला कर दिया! भयभीत होकर उसने आवाज़ लगाई, "लोमड़ी, मेरी मदद करो!"

लेकिन लोमड़ी ने सोचा कि यह उसकी पिछले दिन जैसी ही शरारत है, इसलिए उसने चीखों को अनदेखा कर दिया। दुख की बात है कि भेड़िये ने याक को मार डाला।

अगले दिन, लोमड़ी अपने दोस्त से मिलने गई। जब उसने याक के बेजान शरीर को देखा, तो उसे अपराध बोध हुआ। उसने दुष्ट भेड़िये से बदला लेने की कसम खाई। लोमड़ी ने एक चालाकी भरी योजना बनाई । उसने अपनी पूंछ पर तेल लगाया और उसे बर्फीली बर्फ पर मारना शुरू कर दिया। वही भेड़िया, उत्सुक होकर उसके पास आया और पूछा, "यह तुम क्या कर रही हो, लोमड़ी?"

कुछ दिनों बाद, क्रोधित भेड़िये ने लोमड़ी को ढूंढ़ लिया और उसे मारना चाहा। तेज-तर्रार लोमड़ी ने फिर झूठ बोला, "ओह, मैं वह लोमड़ी नहीं हूँ! मैं तो दूसरे जंगल से आई हूँ और रास्ता भटक गई हूँ।"

"इससे पूंछ मजबूत और सुंदर बनती है," लोमड़ी ने झूठ बोला।एक मजबूत पूँछ पाने के लिए उत्सुक भेड़िया कोशिश करने के लिए विनती करने लगा। लोमड़ी ने टालने का नाटक किया लेकिन आखिरकार मान गई। लोमड़ी की चालाकी काम कर गयी थी और भेड़िये की पूँछ बर्फ से चिपक गई. यह देख लोमड़ी हँसते हुए वहां से भाग गई। भेड़िये ने अपनी पूँछ छुड़ाने के लिए संघर्ष किया, पर इस प्रक्रिया में उसके सारे बाल झड़ गए। इसके बाद, लोमड़ी ने एक चिपचिपा काढ़ा बनाया। जब गंजी - पूंछ वाले भेड़िये ने यह देखा, तो उसने पूछा, "यह अब तुम क्या बना रही हो, लोमड़ी?"

"यह काढ़ा तुम्हारी आँखों को ठंडा और सुखदायक बनाता है," लोमड़ी ने एक बार फिर झूठ बोला।

भेड़िये ने इसे भी आजमाने पर जोर दिया। एक बार लगाने के बाद, काढ़ा, भेड़िये की आँखों में जलन पैदा करने लगा! उसने अपनी आंखों को बुरी तरह से खरोंचा, जिससे उसकी हालत और अधिक खराब हो गई। लोमड़ी, खिलखिलाते हुए, फिर से भाग गई और भेड़िया आधा अंधा होकर दर्द में रह गया।

कुछ दिनों बाद, क्रोधित भेड़िये ने लोमड़ी को ढूंढ़ लिया और उसे मारना चाहा। तेज-तर्रार लोमड़ी ने फिर झूठ बोला, "ओह, मैं वह लोमड़ी नहीं हूँ! मैं तो दूसरे जंगल से आई हूँ और रास्ता भटक गई हूँ।" अब उलझन में पड़े भेड़िये ने उस पर विश्वास कर लिया। "अच्छा, तो तुम यहां क्या कर रही हो?"

लाल लोमड़ी, लाल रंग के बालों वाली एक आम लोमड़ी है। यह दुनिया में सबसे व्यापक रूप से वितरित प्रजातियों में से एक है।

याक, गाय परिवार का एक जानवर है, जिसके लंबे सींग और लंबे बाल होते हैं। इसे हिमालयी क्षेत्र के गांवों में पाला जाता है।

"मैं अपनी पीठ पर ढोने के लिए एक टोकरी बना रही हूँ। यह ताकत बढ़ाने का बहुत बढ़िया उपाय है," लोमड़ी ने कहा। भेड़िया, ताकतवर बनना चाहता था, उसने लोमड़ी से उसके लिए भी एक टोकरी बनाने की विनती की। लोमड़ी ने टोकरी में भारी पत्थर भरकर भेड़िये की पीठ पर रख दिए. भेड़िया दर्द से कराह उठा और लोमड़ी हँसते हुए वहां से रफूचक्कर हो गयी।

लोमड़ी की अंतिम योजना सबसे मुश्किल थी। उसने एक बोरी बनाई और भेड़िये का इंतज़ार किया। जब भेड़िया आया, तो उसने पूछा, "अब तुम क्या कर रही हो, लोमड़ी?"

"मैं अपने दोस्तों के साथ खेलने के लिए एक मज़ेदार बोरी बना रहा हूँ," लोमड़ी ने कहा।

भेड़िया भी शामिल होना चाहता था। लोमड़ी ने उसे बोरी में घुसने के लिए कहा और उसे एक पहाड़ी से नीचे धकेल दिया। परन्तु भेड़िया चमत्कारिक रूप से बच गया, जिस से लोमड़ी निराश हो गई। वह जानती थी कि गाँव वाले भेड़िये को नापसंद करते हैं, इसलिए उसने अपनी अंतिम योजना बनाई।

एक दिन, लोमड़ी रेत नाप रही थी जब भेड़िया, जिसकी अब याददाश्त जा चुकी थी, वहाँ आया। "ये तुम क्या कर रही हो, लोमड़ी?"

"मैं अपने दोस्त को शक्तिशाली बनाने के लिए रेत नाप रही हूँ," लोमड़ी ने झूठ बोला।

भेड़िया, अभी भी शक्तिशाली बनने के लिए उत्सुक था, उसने लोमड़ी से रेत को अपनी पीठ पर रखने की विनती की। लोमड़ी सहमत हो गई, उसने भेड़िये पर रेत की ढेरी लगा दी, और फिर खुद उसके ऊपर चढ़ गई। अब वे गाँव की ओर चल पड़े।

गाँव पहुँचकर लोमड़ी चिल्लाई, "मदद करो! यहाँ एक भेड़िया है!"

हथियारों से लैस ग्रामीणों ने भेड़िये को घेर लिया। भारी रेत के कारण भेड़िया जल्दी यह सब समझ नहीं पाया और अचानक हुए इस घटनाक्रम से चौंक गया। भागने में असमर्थ, भेड़िए ने लोमड़ी से पूछा, "यह सब क्या हो रहा है?"

लोमड़ी ने जवाब दिया, "मैं अपने दोस्त याक, जिसे तुमने मारा था, की हत्या का बदला ले रही हूँ।"
तब तक भेड़िये की मौजूदगी से गुस्साए ग्रामीणों ने भेड़िये को मार डाला। लोमड़ी को अपने दोस्त का बदला लेने पर एक कड़वी-मीठी संतुष्टि महसूस हुई। जंगल के जानवरों ने दोस्ती में विश्वास का महत्व सीखा और चतुर लोमड़ी और बदकिस्मत भेड़िये को याद करते हुए शांति से रहने लगे।

आर्यन गाडगिल द्वारा साझा की गई कहानी

इनमें से अधिकांश कहानियाँ उन अनगिनत किस्सों से पैदा हुई हैं जो स्थानीय लोगों द्वारा बार-बार सुनाए जाते हैं क्योंकि वे अपने आगंतुकों को पहाड़ों में जीवन की कहानियों से आनंदित करना पसंद करते हैं। इनमें से अधिकांश कहानियों को किसी एक व्यक्ति से जोड़ना मुश्किल हो सकता है, लेकिन इतना कहना ही काफी है कि ये उन प्यारे लोगों के बीच मौजूद जीवन के आनंद की भावना का प्रमाण हैं जो पहाड़ों को अपना घर कहते हैं।

कुछ कहानियाँ व्यक्तियों द्वारा दी गई थी: विशेष रूप से, जेन ऑर्टन द्वारा जिन्होंने स्पीति की यात्रा की है और लोककथाओं का दस्तावेजीकरण किया है और आर्यन गाडगिल द्वारा, जो कहानियों के प्रति प्रेम और लेखन के प्रति प्रतिभा वाले एक युवा छात्र-शोधकर्ता हैं। हम उनके योगदान के लिए उनका धन्यवाद करते हैं।

सबसे बढ़कर, हम उन कई, कई स्थानीय लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं जिनके पास कहानियों और हंसी का अंतहीन भंडार है।

कलाकार

नवांग तन्खे

नवांग तन्खे काजा में एक स्वतंत्र कलाकार है और इन्होंने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से दृश्य कला का अध्यन किया है। इन्हें तेल के रंगों से चित्रकारी पसंद करना है और इन्होंने अपने कौशल प्रदर्शन के लिए बहुत सारे कला मेले और प्रदर्शनियों में भाग लिया है।

nawangtankhe@gmail.com +91 9459962433/ +91 8219150327
@art in Spiti @art_in_spiti

पीयूष शेखसरिया

प्रशिक्षण से एक वास्तुकार, पीयूष की कई रुचियां हैं जिनमें वन्यजीव संरक्षण, पर्यावरण, फोटोग्राफी, लेखन से लेकर स्केचिंग तक शामिल हैं।

enthunature www.peeyushsekhseria.com

हमें लिखें

हिमकथा के लिए एक लेख लिखने के लिए या अपनी प्रतिक्रिया, सुझाव या शिकायत साझा करने के लिए,कृपया इस नंबर पर हमसे संपर्क करें:

Call/WhatsApp: +91 931 755 3867 | Email: himkathaindia@gmail.com

सहयोग दे

यदि आप चाहते हैं कि हिमकथा अधिक गांवों तक पहुंचे और पूरे पश्चिमी हिमालय से कहानियां लेकर आए, तो नेचर कंज़र्वेशन फाउंडेशन में हाई एल्टीट्यूड प्रोग्राम का समर्थन करने पर विचार करें। सभी दान धारा 80(जी) के तहत छूट प्राप्त हैं।

सहयोग के लिए स्कैन करें

Chola
Enter a better life

हिमकथा उच्च हिमालय की अनूठी कहानियों, जीवंत अनुभवों और मानव-प्रकृति संबंधों के स्वदेशी दृष्टिकोण का संग्रह है। हमारा समर्थन करने के लिए हम चोलामंडलम इन्वेस्टमेंट एंड फाइनेंस कंपनी लिमिटेड के आभारी हैं।

टीम श्रेय:
नेचर कंज़र्वेशन फाउंडेशन के हाई एल्टीट्यूड प्रोग्राम द्वारा प्रकाशित
न्यूज़लैटर डिज़ाइन: मालविका
अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद: सीमा बजाज और कलज़ंग गुरमेत
हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद: बीजू नेगी
न्यूज़लेटर लोगो: श्रृंग श्रीराम
डिज़ाइन माध्यम: कैनवा प्रो